P.G. SEM – II
PAPER-CC-05

भारतेन्दु युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ —

हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग का सूत्रपात बाबू हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु का आविर्भाव 1850 ई० में हुआ था और तब से लेकर 50 वर्षों तक हिन्दी साहित्य को संस्कार भारतेन्दु संस्कार से ही मिलता-जुलता रहा। ज्ञान-विज्ञान के नए क्षितिज पर खड़ा होकर इस प्राणवंत व्यक्ति ने हिन्दी भाषा और साहित्य को नयी दिशाओं की ओर प्रेरित किया और सबसे आगे बढ़कर साहित्य को जीवन के आमने सामने खड़ा कर दिया। डॉ० रामविलास शर्मा ने भारतेन्दु युग के साहित्य को जनवादी साहित्य कहा है। जनवादी साहित्य आम जनता की आस्था, आकांक्षा और राग-विराग का अभिलेख होता है। भारतेन्दु और उसके युग के अन्य साहित्यकारों ने साहित्य में पहली बार समसामयिक समस्याओं को अभिव्यक्ति दी। इसलिए वह साहित्य जनवादी साहित्य कहलाया। उनके युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए हमें उस साहित्य को पद्य और गद्य दो भागों में बाँटकर उसका निरीक्षण-परीक्षण करना होगा।

काव्य प्रवृत्तियाँ : सर्वप्रथम हम भारतेन्दु और उसके युग की काव्य प्रवृत्तियों पर विचार करेंगे। कविता की दृष्टि से भारतेन्दु और उसके युगीन कवि पुरातन और नूतन का संगम उपस्थित कर रहे थे भारतेन्दु युग के कवि उस बिन्दु पर खड़ा होकर काव्य रचना कर रहे थे जहाँ से एक रास्ता मध्यकालीन भक्ति और रसिकता की ओर जाता है और दूसरा रास्ता नये भाव-बोध की नयी दिशा में उद्घाटित करता है। इसलिए इस युग की कविता की पहली विशेषता यह है कि इसमें प्राचीन भावों का आख्यान प्रस्तुत किया गया है प्राचीन भावों के साथ-साथ रीतिकालीन रसिकता की भी प्रवृत्ति भारतेन्दु और उस युग के अन्य कवियों में दिखाई पड़ती है। डॉ॰ रामविलास शर्मा ने 'भारतेन्दु: युगनायक' नामक पुस्तक में तो लिखा है कि शृंगार रस के किसी-किसी पद में तो सूरदास से टक्कर लेने की क्षमता है। निष्कर्ष यह है कि भारतेन्दु युग की कविता की एक प्रवृत्ति यह थी कि उसमें मध्यकालीन रूढ़ियों और परम्पराओं का पालन हुआ है यह पालन इतनी कुशलता के साथ हुआ है कि मध्यकाल के बड़े कवि भी

भारतेन्दु युग की पंक्तियों को पढ़कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं। असल में हिन्दी कविता के पास अभी तक वह भाषा लिखकर नहीं आयी थी जिसमें भावों और विचारों की ठीक-ठीक अभिव्यक्ति हो सके।

2 देशभक्ति की प्रवृत्ति — भारतेन्दु युग की कविता की एक मुख्य धारा देश भक्ति की भावना है। भारतेन्दु ने शुरू-शुरू में राजभक्ति पर आधारित कुछ कविताएँ लिखी थी। लेकिन वक्त के बदलाव के साथ-साथ उनकी राजभक्ति राष्ट्रभक्ति में बदल गई और यह राष्ट्रभक्ति इतनी उग्र हो गई कि हमें आज भी आश्चर्य होता है कि उस युग में इतना निर्भीक कवि कैसे हुआ इस महाप्राण कवि ने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शासन नीति का विरोध करते हुए व्यंग की भाषा में साफ लिखा है कि:

"भीतर-भीतर सब रस चूसै बाहर से तन मन धन मूसै।
जाहीर बातन में अति तेज क्या सखि साजन नहीं अंग्रेज।।"

जिस भाषा नीति को हम आज भी सुलझाने में असफल रहे हैं उसके सम्बन्ध में भारतेन्दु ने उसी समय घोषणा कर दी थी।

'निज भाषा उन्नति अहै। सब भाषा को मूल।
बिनु निज भाषाज्ञान मिटै न हिय को शूल।।'

3. जनवादी विचारधारा – भारतेन्दु युग के साहित्य की एक तीसरी प्रवृत्ति यह है कि उसमें जनवादी विचारों और भावों को प्रश्रय मिला है समाज सुधार के प्रायः सभी अंगो पर इस युग में काफी कविता लिखी गई मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित लोगों की कटु आलोचना अंग्रेजों की साज-पोशाक पहननेवाले भारतीय पर व्यंगबाण छोड़े हैं। इस तरह सभी तरह की रूढ़ियों, अन्ध विश्वासों, शोषण और दमन सभी समस्याओं पर इस युग की कविता मुखर हो उठी है। जनता की समस्या को जनता की भाषा में उपस्थित करनेवाला साहित्य ही जनवादी साहित्य हो सकता है। इस कसौटी पर भारतेन्दु का साहित्य शत [redacted] प्रतिशत खड़ा उतरता है।

4. ब्रजभाषा की प्राधनता – इस युग की कविता मुख्यतः ब्रजभाषा में लिखी गई। खड़ीबोली अबतक गद्य की ही भाषा मानी जाती थी भारतेन्दु ने खड़ी बोली में कविता लिखने का कुछ प्रयास तो किया लेकिन उसमें उसकी गति नही आई। इस युग के अन्य साहित्यकार भी इस क्षेत्र में असफल रहे। भारतेन्दु युग में कविता की भाषा [redacted] ब्रजभाषा ही बनी रही।

ब्रजभाषा को एक स्वस्थ सम्पन्न एवं सुदीर्घ परम्परा प्राप्त थी इसलिए इस युग के कवि इस भाषा में सहजतापूर्वक अपने भाव और विचार को व्यक्त कर सके खड़ी बोली में इस युग के सभी कवियों के विचार बाधित होते रहे जिस कारण उन्होंने ब्रजभाषा का ही मार्ग अपनाया। इस क्षेत्र में उन्हें अच्छी सफलता मिल गई।

5. अभिव्यक्ति की सहजता और कला पक्ष की रूक्षता — भारतेन्दु युग में सभी साहित्यकार अपने भावों और विचारों को जनता तक सम्प्रेषित करने के लिए आकुल-व्याकुल हो रहे थे। भावों का खजाना इतना लबालब था कि उन्हें व्यक्त करने के लिए वे साहित्यकार शिल्प योजना की परवाह नहीं करते। इसलिए भारतेन्दु युग का काव्य साहित्य कला की दृष्टि से रूक्ष और कमजोर है। असल में उनका मानना था कि— "भाषा कैसी चाहिए, भाव अनूठो होय।" वास्तव में इस युग के साहित्यकार जीवन की सच्चाई में विश्वास करते थे। अतः उसे कला की नजाकत की परवाह नहीं थी। इस युग के साहित्य का मूल्यांकन कला की दृष्टि से नहीं बल्कि सामाजिक राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में होना चाहिए।

भारतेन्दु युग का साहित्य पद्य से अधिक गद्य में प्राप्त होता है। इसलिए भारतेन्दु और उनके सहयोगी साहित्यकारों का वास्तविक महत्व उनके गद्य साहित्य में ही निहित है। इस युग के गद्य की पहली विशेषता यह है कि इसमें खड़ी बोली गद्य का प्रयोग हुआ है। खड़ी बोली गद्य में साहित्य की विविध विधाओं को जन्म देने का श्रेय भारतेन्दु एव उनके युगीन साहित्कारों को ही है। स्वंय भारतेन्दु ने 17 नाटकों की रचना की कुछ तो इतने क्रांतिकारी सिद्ध हुए कि सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश भारतेन्दु को नवयुग का विधाता मानने लगा।

"आवहु सब मिल रोवहु भारत भाई।"
हा! हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।"

जैसे पंक्तिया लिखकर भारतेन्दु ने भारत-वासियों का आह्वान किया और देश माता की दुर्दशा दिखाकर उसे स्वाधीन बनाने के लिए जागरण मंत्र दिया। ऐसी उत्कृष्ट राष्ट्रीयता और समाज सुधार की भावना अन्यत्र दुर्लभ है। भारतेन्दु ही नहीं प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमधन आदि नाटककार भी अपने नाटकों में सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं को ही व्याख्यायित करते थे।

सबसे बड़ी बात यह कि इस साहित्यकारों ने नाटक को खेलने के उद्देश्य से लिखा था न कि पढ़ने के उद्देश्य से रंगमंच की दृष्टि से लिखे गये ये नाटक इतने सफल सिद्ध हुए कि जन-जीवन में एक क्रांति मच गई।